# महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

# की पी-एच.डी. [हिन्दी] उपाधि हेतु प्रस्तुत

# शोध सारांश

## “माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन”

***
*****
*******


**शोध-छात्र**
सागर अरुणभाई देसले

**शोध-निर्देशक**
डॉ.दीपेन्द्रसिंह पुष्पेन्द्रसिंहजी जाडेजा
प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा (गुजरात)



पंजीकरण संख्या : FOA/1562
पंजीकरण दिनांक : 18/02/2021


**2025**

# शोध सारांश

यात्रा साहित्य केवल गंतव्यों की सूची या भौगोलिक स्थानों का विवरण मात्र नहीं है। यह एक सामान्य भ्रांति रही है कि यात्रा साहित्य केवल मार्गों, स्थानों, और पर्यटन स्थलों का वर्णन मात्र होता है। जबकि सच्चाई यह है कि यात्रा साहित्य में स्थानों के साथ-साथ वहाँ के लोगों, उनकी संस्कृति, रहन-सहन, परंपराओं, और जीवन शैली का समावेश होता है। यात्रा लेखक न केवल भौतिक दूरी तय करता है, बल्कि वह समय के साथ-साथ चेतना और सामाजिक संरचनाओं के बीच भी यात्रा करता है। यात्रा साहित्य व्यक्ति और समाज के बीच एक संवाद रचता है। यह न केवल लेखक की दृष्टि को उद्घाटित करता है, बल्कि पाठक को भी नए अनुभवों, दृष्टिकोणों और संवेदनाओं से जोड़ता है। यह साहित्य का वह रूप है जो पाठक को स्थूल से सूक्ष्म, दृश्य से अदृश्य और प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर ले जाता है।

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता का यात्रा साहित्य मानवीय चेतना, संवेदना और संस्कृति का विस्तार है। आलोच्य लेखिका जब किसी स्थान की यात्रा करती है, तो वह केवल बाहर की दुनिया नहीं देखती, बल्कि स्वयं के भीतर की दुनिया से भी साक्षात्कार कराती है। इस प्रक्रिया में माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता की अपनी भावनाएँ, सोच, सामाजिक दृष्टिकोण और संवेदनाएँ उद्घाटित होती हैं। इस प्रकार यात्रा साहित्य, आत्म-साक्षात्कार और आत्म-अन्वेषण का माध्यम भी है।

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रावृत्तांत को सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाए तो इनका यात्रा साहित्य विभिन्न समाजों की बहुरंगी छवियों को प्रस्तुत करता है। विभिन्न सभ्यताओं के अंतर-संवाद को यह साहित्य सम्भव बनाता है। एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति के साथ संवाद में रखने का कार्य आलोच्य लेखिकाओं के यात्रा साहित्य बखूबी देखने को मिलता है। यह भी सत्य है कि लंबे समय तक यात्रा साहित्य में पुरुषों का वर्चस्व रहा है। भारतीय और विश्व साहित्य में अनेक प्रसिद्ध पुरुष यात्रा लेखक हुए हैं जैसे राहुल सांकृत्यायन, मार्को पोलो, इब्न बतूता आदि। इन्होंने यात्रा साहित्य को शोध, अनुभव और ऐतिहासिक संदर्भों

से समृद्ध किया। इनके साहित्य में बौद्धिकता और तथ्यात्मकता अधिक दिखाई देती है। लेकिन, यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि पुरुष लेखकों की दृष्टि और अभिव्यक्ति एक विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ी होती है। जहाँ उनका अनुभव अधिक बहिर्मुखी और वस्तुपरक होता है, वहीं स्त्रियों का दृष्टिकोण अधिक आंतरिक, आत्मपरक और संवेदनशील होता है।

ऐतिहासिक रूप से स्त्रियों की स्वतंत्र यात्रा करना समाज में स्वीकार्य नहीं था। सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक प्रतिबंधों के कारण स्त्रियों को यात्रा करने की स्वतंत्रता नहीं थी। इसी कारण यात्रा साहित्य में महिलाओं की भागीदारी सीमित रही है। परंतु माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता ने इस परंपरा को तोड़ा है, एवं नव तरुणियों के लिए यात्रा का मार्ग स्थापित किया है। उन्होंने दुनिया की 120 से अधिक देशों की यात्राएं की, इन 120 देशों के 250 शहरों का वर्णन इन यात्राओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जो अनेक विविधताओं से भरा है, सम्पूर्ण है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता ने अपने यात्रा अनुभवों को यथार्थ रूप से दुनिया के सामने रखा है और उसे साहित्य का रूप दिया, उन्होंने इस विधा को एक नई दिशा दी। उनका दृष्टिकोण केवल स्थान-परिवर्तन तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसमें स्त्री-संसार की गहन अनुभूतियाँ, आत्मसंवाद और सामाजिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण भी होता है। यह दृष्टिकोण यात्रा साहित्य को संवेदनशील और आत्मपरक बनाता है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता ने यात्रा को केवल बाहरी अन्वेषण नहीं माना, बल्कि उसे एक आंतरिक यात्रा, एक आत्म-संवाद और स्त्री दृष्टि से समाज को समझने का माध्यम बनाया है। माला वर्मा एवं प्रीति सेनगुप्ता ने देश-विदेश की यात्राओं से जो ज्ञान प्राप्त किया वह साहित्य प्रेमियों के लिए समर्पित किया। उन्होंने अपनी यात्राओं के द्वारा यायावरों को 'एकला चलो रे' की दिशा में मोड़ दिया। संक्षिप्त में कहे तो माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता की यात्रा साहित्य की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

विदेशी समाजों के नकारात्मक पक्षों में लेखिकाओं ने जिस भोगवादी मानसिकता, सेक्स के खुलेपन, बाजारवाद, पारिवारिक संबंधों में तनाव, अकेलेपन और अमानवीयता को

रेखांकित किया है, वह उनके संवेदनशील और विवेचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। युवाओं की वृद्धजनों के प्रति उपेक्षा और सामाजिक आत्मीयता के क्षरण जैसे पहलुओं को देखकर लेखिकाओं को यह अनुभव होता है कि भौतिक उन्नति के साथ-साथ मानवीय मूल्यों में गिरावट आई है। यह दृष्टिकोण स्त्री संवेदना की विशेषता है, जिसमें केवल बाहर का नहीं, बल्कि भीतर का समाज भी देखा जाता है। वहीं, माला जी और प्रीति जी ने विदेशी समाज के सकारात्मक पक्षों को भी निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया है। विवाह की सरलता, सामाजिक अनुशासन, करुणा और स्नेह जैसे मानवीय मूल्यों के साथ-साथ आधुनिकता और स्त्री आत्मनिर्भरता की भावना को उन्होंने सराहा है। साहित्य और साहित्यकारों के प्रति सम्मान तथा बच्चों की मासूमियत के चित्रण में उनकी भावुकता, संवेदनशीलता और गहन मानवीय दृष्टिकोण झलकता है। इन यात्राओं के माध्यम से लेखिकाओं ने केवल स्थान विशेष का वर्णन नहीं किया, बल्कि वहाँ की सामाजिक संरचना, मानवीय संबंध, सभ्यता और संस्कृति का सूक्ष्म विश्लेषण किया। उनका दृष्टिकोण तटस्थ, संतुलित और मूल्यनिष्ठ रहा है, जो यात्रा साहित्य को केवल गंतव्य तक सीमित न रखकर उसे एक सामाजिक दस्तावेज की तरह प्रस्तुत करता है। यह स्त्री-दृष्टि का विशेष योगदान है, जो समाज को उसकी संपूर्णता में देखने का प्रयास करती है।

माला वर्मा ने अपने यात्रावृत्तांतो में स्त्री के अनुभवों को, उसकी मानसिकता और उसकी सोच को प्रमुखता दी है। उनकी लेखनी में सामाजिक जड़ताओं के प्रति एक सजग दृष्टिकोण दिखाई देता है। वे जब किसी स्थान पर जाती हैं, तो उस स्थान की महिलाओं, उनकी स्थिति, जीवन पद्धति और संघर्षों को भी रेखांकित करती हैं।

प्रीति सेनगुप्ता की यात्रा लेखनी में विविधता और प्रयोगशीलता देखने को मिलती है। वे अपनी यात्राओं के माध्यम से केवल भौगोलिक परिवेश ही नहीं, बल्कि उन स्थानों में स्त्रियों की भूमिका, संघर्ष, संस्कृति और चेतना को भी उजागर करती हैं। उनकी लेखनी में स्त्री की दृष्टि के साथ-साथ मानवीय करुणा और सौंदर्यबोध का समन्वय होता है।

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करते हुए हमने अपने खोज में पाया कि, आलोच्य लेखिकाओं ने अपनी-अपनी भाषाओं हिंदी और गुजराती में यात्रा साहित्य को समृद्ध किया है। यद्यपि भाषा अलग है, लेकिन दोनों की दृष्टि, संवेदना और अनुभव की गहराई में समानता दिखाई देती है। उन्होंने अपने यात्रावृत्तांतों में केवल स्थानों का वर्णन नहीं किया, अपितु उन स्थानों की आत्मा को शब्दों के माध्यम से उजागर किया है।

माला वर्मा, जो हिंदी यात्रा साहित्य की एक सशक्त लेखिका मानी जाती हैं, अपने यात्रा वर्णनों में स्थान विशेष की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को गंभीरता से उकेरती हैं। वे जहाँ जाती हैं, वहाँ की संस्कृति, जीवन-शैली, रीति-रिवाज, और मानवीय व्यवहार को गहराई से देखती हैं। उनके साहित्य में स्त्री की दृष्टि से समाज का विश्लेषण, उसकी मानसिक और सामाजिक स्थिति का निरूपण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे यात्रा को केवल भौगोलिक या भौतिक अनुभव नहीं मानतीं, बल्कि एक मानसिक और आत्मिक यात्रा के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

प्रीति सेनगुप्ता गुजराती साहित्य की प्रमुख यात्रा लेखिका है। प्रीति जी अपने यात्रा अनुभवों को अत्यंत सरस, भावप्रवण और सौंदर्यबोध से युक्त भाषा में प्रस्तुत करती हैं। उनके यात्रा-वर्णनों में प्रकृति सौंदर्य के साथ-साथ मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति, स्थानीय समाज का यथार्थ चित्रण, और सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रति जिज्ञासा और सम्मान झलकता है। वे अपने यात्राओं के माध्यम से संसार के भिन्न-भिन्न आदिवासी समाज के बारे में नयी और रोचक जानकारी एवं उनकी प्रथा का बारीकी से अपने यात्रावृत्तांत में वर्णन करती है।

आलोच्य लेखिकाओं ने स्वदेशी और विदेशी समाजों की तुलना करते हुए, वहाँ की वेशभूषा, खान-पान, त्योहार, और मानव-व्यवहार को अपनी लेखनी में स्थान दिया है। उनके लेखन में तथ्यों के साथ-साथ संवेदनात्मक पक्ष, नैतिक मूल्य, और संस्कृति के प्रति आत्मीय दृष्टिकोण की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है। प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि माला वर्मा का लेखन हिंदी भाषी पाठकों के लिए जितना महत्वपूर्ण है,

उतना ही प्रीति सेनगुप्ता का योगदान गुजराती पाठकों के लिए है। दोनों ने अपने अनुभवों को भाषा की सीमा से परे ले जाकर समाज और मानवता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता दोनों ने अपने यात्रा साहित्य के माध्यम से न केवल साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि स्त्री दृष्टि को भी एक नई पहचान दी है। उनके लेखन में अनुभव की प्रामाणिकता, भाषा की सहजता और दृष्टिकोण की गहराई उन्हें समकालीन यात्रा साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता ने देश-विदेश की अनेक बार यात्राएँ कीं और उसके आधार पर चौबीस से अधिक यात्रापरक कृतियों की रचना की है। प्रीति सेनगुप्ता की राय में 'उतरोत्तर' एवं माला वर्मा की राय में 'आर्कटिक ध्रुवीय भालू का देश' इन कृतियों में सर्वोत्तम है, यह सबसे साहसिक और सनसनीखेज यात्रा थी। दुनिया के सातों महाद्वीप की यात्रा कर लेने के बाद उन्हें ऐसा महसूस होता है की अभी भी कुछ छूट रहा है। ऐसे में दोनों लेखिका माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता दोनों उत्तर ध्रुव की यात्रा करती है। उत्तर ध्रुव एवं दक्षिण ध्रुव (अंटार्कटिका) पृथ्वी के दोनों छोर की यात्रा करके अपने आप को परिपूर्ण मानती है।

आलोच्य लेखिकाओं ने यात्रा के दौरान आवागमन का ऐसा कोई साधन नहीं है, जिसका उपयोग नहीं किया हो। इन्होंने सुबह चार (4:00) बजे यात्राएं की, रात बारह (12:00) बजे यात्राएं की, दो (2:00) बजे यात्राएं की हवाई जहाज से यात्रा की, ट्रेन से यात्रा की बस से यात्रा की, बैलगाड़ी से यात्रा की, घोड़े पर बैठकर यात्रा की, खच्चर पर बैठकर यात्रा की, टट्टू पर बैठकर यात्रा की, पैदल चलकर यात्रा की, यह उस रूप में संपूर्ण यात्री है जो आधुनिक सुख-सुविधा, मौसम, समय, आवागमन की चिंता किए बिना बस घर से निकल पड़ते हैं। व्यक्ति को अपने घर में आने-जाने के लिए कोई नियोजन या सुख सुविधा के बारे में सोचना विचारना नहीं पड़ता है और इस विचार से माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता समग्र दुनिया को ही अपना घर मानती है। वह बिना किसी चिंता के संसार को अपना घर-परिवार मानकर निश्चिंत होकर यात्राएं करती है। यह वह साहसिक यात्री है, जिसने बस खराब हुई तो पैदल चलकर यात्रा की, कई बार नाव से यात्रा की, अंटार्कटिका यात्रा के समय प्रीति जी

को मौत से साक्षात दर्शन हुए। बावजूद इसके यह घटना उन्हें यात्रा करने से रोक नहीं पाती है, और इस घटना के बाद उनका साहस और सुदृढ़ होता है, और वह पृथ्वी के उत्तरी छोर (उत्तर ध्रुव) पर जाने का मन बनाती है। यह उनके व्यक्तित्व की झलक है। जहां इन घटनाओं से वह पीछे हटने वाली स्त्री नहीं है। यहाँ उनके स्वभाव में साहस एवं निडरता का प्रमाण मिलता है। इन्ही कारणों के वजह से उनके अनुभव इतने गाढ़ हुए, प्रगाढ़ हुए। यही प्रमाण है की आलोच्य लेखिकाओं ने दूसरे साहित्यकारों से अलग लिखा। क्योंकि उनके अनुभव में ही इतनी सारी विविधता है।

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता की यात्रापरक कृतियों में विभिन्न देशों की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का उल्लेख है। ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं धार्मिक, परिस्थितियों के अंकन में उनकी विशेष रुचि है। जो उनके यात्रा साहित्य को विश्व पटल पर एक अलग पहचान दिलाता है।

इस तरह प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य में साम्यता तथा विषमता दोनों देखने को मिलता है, एक ओर आलोच्य लेखिकाओं के यात्रा वर्णन में समाज के बारीक पक्षों का समान वर्णन है, तो दूसरी ओर स्थानीय लोगों के साथ में भिन्न-भिन्न अनुभव है। दोनों के यात्रा करने के तरीके में विषमता साफ नजर आती है।

स्त्रियों को समाज मे कम स्वतंत्रता मिलती है। माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के असंख्य यात्रा से यह प्रतीत होता है की, अब आने वाला समय तरुणियों के लिए यात्रा के नए अवसर लेकर आएगा। ऐसा होने पर इसका सम्पूर्ण श्रेय माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता को दिया जायेगा। कहना उचित होगा की, माला जी और प्रीति जी ने यात्रा के द्वारा भविष्य में आने वाली तरुनियों के लिए मार्ग प्रशस्त करने की परंपरा का आरंभ किया है।

**शोध पद्धति :**

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे मैंने तुलनात्मक पद्धति, विवरणात्मक पद्धति, समीक्षात्मक पद्धति, साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग किया है।

**शोध विषय का उद्देश :**

जो लोग यात्रा के पहले यात्रा के स्थलों की पूरी जानकारी लेना चाहते है, उन सभी यात्रियों के लिए, जो प्रवास स्थलों की प्रामाणिक जानकारी चाहते हैं उनके लिए भी हमारा शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

इस शोध कार्य से हिंदी साहित्य तथा गुजराती साहित्य के उन सभी विद्यार्थियों को लाभ होगा जो यात्रा साहित्य विषय पर कार्य करना चाहते हैं, उनके लिए यह शोध सामग्री ग्रंथ के रूप में उपयोगी साबित होगा।

भारत में अनेक ऐसे विश्वविद्यालय है जहां पहले यात्रा साहित्य किसी यूनिट के रूप में पढ़ाया जाता था, अगर इस क्षेत्र में अच्छे खासे कार्य होंगे और इस क्षेत्र में यात्रा साहित्य पर लिखी हुई पुस्तकें तथा उन पर किए गए शोध कार्यों के सहारे एक पूरे प्रश्नपत्र के रूप में यात्रा साहित्य पढ़ाने को इच्छुक विश्वविद्यालयों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होंगे।

वर्तमान में इसकी अहमियत होने के कारण अब मैं देख रहा हूं कि, राजस्थान के तथा पूर्वोत्तर भारत के बहुत सारे विश्वविद्यालयों ने यात्रा साहित्य पर पूरा प्रश्न पत्र ही बनाया है, और एक विषय के रूप में यात्रा साहित्य पढ़ाया जा रहा है, इस क्षेत्र में काम करने की म्हणती आवश्कता है। इस विषय पर अधिक शोध कार्य होगा तो पढ़ाने के लिए अधिक सामग्री प्राप्त होगी, तथा हम ऐसा मान सकते हैं कि आने वाले समय में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में यह विषय पढ़ाया जाएगा।